महापुराण एवं उपपुराण ,

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर प्रलय पर्यन्त सम्पूर्ण विश्व के क्रमबद्ध इतिहास को प्रदर्शित करने वाले भारतीय एवं वैदिक संस्कृति के प्रतीक स्वरूप और धर्म की स्थापना में अग्रगण्य, सम्पूर्ण विषयों को आत्मसात् करने वाले 18 महापुराणों का क्रमपूर्वक उल्लेख महर्षि वेदव्यास ने विष्णुपुराण में किया है–

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवञ्च शैवं भागवतं तथा।
तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्।।
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं तथा।
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं स्मृतम्।।
वाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्।
चतुर्दशं वामनकं कौर्मं पञ्चदशं तथा।।
मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डञ्च ततः परम्।
महापुराणान्येतानि ह्यष्टादश महामुने।। 3.6.21-24

पुराणों की संख्या प्राचीन काल से 18 मानी गयी है। इन अष्टादश पुराणों के नाम प्रायः प्रत्येक पुराण में उपलब्ध होते हैं। देवी-भागवत ने प्रथमाक्षर का उल्लेख करते हुये अष्टादश पुराणों का नामोल्लेख अनुष्टुप् में किया है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापद्लिङ्ग-कू-स्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्।।

मकारादि दो पुराण (1) मत्स्य तथा (2) मार्कण्डेय, भकारादि दो पुराण (3) भागवत तथा (4) भविष्य, ब्रत्रयम्- (5) ब्रह्म (6) ब्रह्मवैवर्त तथा (7) ब्रह्माण, वकार से चार–(8) वामन (9) विष्णु (10) वायु तथा (11) वाराह, अनापत्लिंग कुस्क से–(12) अग्नि (13) नारद (14) पद्म (15) लिङ्ग (16) गरुड (17) कूर्म, तथा (18) स्कन्द।

'पुराण अठारह है'–यह प्रसिद्ध ही है। वस्तुतः ये अठारह स्वतंत्र पुराण नहीं, किन्तु एक ही पुराण के अठारह प्रकरण है। जिस प्रकार किसी ग्रंथ में अनेकों अध्याय होते हैं उसी प्रकार ये 18 पुराण के ही 18 अध्याय है। अतः उनका क्रम भी नियत है। स्वतंत्र ग्रंथों में कोई नियत क्रम नहीं रहता, किन्तु पुराणों में ऐसा नहीं है उनका एक निश्चित एवं सटीक क्रम है। सप्तम पुराण कहने पर 'मार्कण्डेय पुराण' का ही बोध होगा, त्रयोदश पुराण कहने से 'स्कन्दपुराण ही समझा जायगा। इनके क्रम में स्थान परिवर्तन असंभव है। अतः पुराण सर्वदा निम्नलिखित क्रम से ही स्मरण किये जाते है–(1) ब्रह्म, (2) पद्म, (3) वैष्णव, तथा (4) वायव्य (शैव), (5) भागवत (6) नारद, (7) मार्कण्डेय, (8) आग्नेय, (9) भविष्य, (10) ब्रह्मवैवर्त, (11) लैङ्ग, (12) वाराह, (13) स्कन्द, (14) वामन, (15) कौर्म, (16) मत्स्य, (17) गरुड, और (18) ब्रह्माण्ड।

यह पुराणों का सर्वसम्मत क्रम न होने पर भी बहुसम्मत क्रम अवश्य ही है। पुराणविद् विचारकों के मत में यह क्रम साभिप्राय है। इस विचार की दृष्टि को ध्यान में रखकर पुराणों के क्रम पर विचार करने पर उनके क्रम का

औचित्य स्वतः उद्घाटित हो जाता है----

सर्वप्रथम जिज्ञासा प्रकट होती है कि इस ब्रह्माण्ड का प्रादुर्भाव किस प्रकार हुआ? तैत्तरीय संहिता में स्पष्ट उल्लिखत है कि–**'ब्रह्म ब्रह्माभवत् स्वयम्'** अर्थात् 'सृष्टि-कार्य के प्रतिपादन के लिये ब्रह्म ही ब्रह्मा हुए'। निष्कर्षतः सृष्टि के मूल के रूप में ब्रह्मादि कर्ता को स्पष्ट करने के लिये 'ब्रह्मपुराण' का उल्लेख क्रम में सर्वप्रथम आता है। ब्रह्मा के प्रकट होने के रहस्य को स्पष्ट करने के लिये 'पद्मपुराण' दृष्टि प्रदान करता है कि ब्रह्मा का प्राकट्य कमल=पद्म से हुआ। पुनः कमल के लिये जिज्ञासा होने पर 'विष्णु-पुराण' उसको बताता है कि यह कमल विष्णु की नाभि से उद्भूत था। 'वायु-पुराण' भगवान् विष्णु भगवान् की शय्या 'शेषशय्या' का निरूपण करता है। शेषशय्या का आधार क्षीरसमुद्र है इस समुद्र के रहस्य को स्पष्ट करता है–'श्रीमद्भागवत'। नारदजी भगवान् विष्णु के स्मरण में तैलधारावत् तल्लीन रहते है। वे अपनी वीणा पर भगवान् के नाम संकीर्तन का आनन्द लेते रहते है–इस स्वरूप को नारद-पुराण के द्वारा जाना जाता है। इस प्रकार छः पुराणों के द्वारा क्रमपूर्वक सृष्टि के विकास को प्रदर्शित किया गया है।

परन्तु जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि यह सृष्टि-चक्र निर्बाध रूप से किसकी प्रेरणा के घूम रहा है? इस जिज्ञासा को शान्त करता है–'मार्कण्डेय पुराण'। घट के अन्दर प्राणशक्ति तथा ब्रह्माण्ड के अन्दर अग्निरूप से क्रियाशील होने वाली वस्तु की वस्तुतः प्रेरक होती है–यह भी एक मान्य मत है और इसका प्रतिपादन करता है अष्टम पुराण–'अग्निपुराण'। अग्नि तत्त्व का आधार सूर्य है, मूलतः सूर्य ही प्रेरक शक्ति का कार्य करता है–**'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषः'**–वह ही सम्पूर्ण सृष्टि की एकमात्र आत्मा है। इस प्रकार सृष्टि के उत्पादन में सूर्य की महिमा का प्रतिपादन 'भविष्यपुराण' के द्वारा प्राप्त है। मूल तत्त्व 'ब्रह्म' के विषय में उत्पन्न भ्रान्तियों का निराकरण कर 'ब्रह्म से ही इस जगत् का प्रादुर्भाव होता है'--इस मत की पुनः प्रतिष्ठापना 'ब्रह्मवैवर्त-पुराण' से प्राप्त होती है। विकार एवं विवर्त का पार्थक्य तो सर्वत्र प्रख्यात है। ब्रह्म से जगत् उत्पन्न होता तो है, परन्तु स्वयं तात्त्विक वस्तु न होकर मायिक है। अतः ब्रह्मवैवर्त की संज्ञा से ब्रह्म के मूल कारण होने और विश्व को उसका विवर्त होने के सिद्धान्त का प्रतिपादन 'ब्रह्मवैवर्त-पुराण' से प्राप्त है।

पुनः जिज्ञासा होती है कि इस मूल तत्त्व ब्रह्म को किसविध जाना जाय? वह तो निर्गुण निराकार है, सगुण साकार रूप में उसकी आराधना किस प्रकार हो सकती है? आदि-आदि प्रश्नों का समाधान अवशिष्ट पुराणों के माध्यम से बताया गया है। ब्रह्म की शिव तथा विष्णु के रूप में प्रसिद्धि सर्वमान्य है। ये दोनों ही समय-समय पर विविध रूपों में अवतार ग्रहण कर प्रकट होते है। एकादश 'लिंगपुराण' एवं द्वादश 'स्कन्द-पुराण' 'शिव' नामक अवतार को प्रतिपादित करते है। वाराह, वामन, कूर्म, तथा मत्स्य–ये भगवान् विष्णु की अवतार-चतुष्टयी है। इन अवतारों का सृष्टि तत्त्व से विशेष सम्बन्ध है। वे इस मनुष्य-लोक में अवतरित होकर भक्तों के क्लेश का निवारण करते हैं तथा उनके लिये मुक्ति के मार्ग को बताते है। अन्तिम दो पुराण जीव-जन्तुओं की गतिविधियाँ है। कर्म, ज्ञान तथा उपासना के सम्पादन से जीवन को कौन गतियाँ प्राप्तव्य है? इसको बताने वाला सत्रहवाँ पुराण–'गरुड-महापुराण' है जो मरणान्तर स्थिति के विशेष विवरण को बताता है। तथा इस मरणान्तर जीवों की गतियों के विस्तृत क्षेत्र को बतलाने वाला है अन्तिम 'ब्रह्माण्डपुराण'। अपने-अपने शुभाशुभ कर्मों से प्राप्त फल के अनुसार जीव इस ब्रह्माण्ड में भ्रमण करता हुआ सुखदुःख का भोग करता है।

इस ज्ञान का आरम्भ ब्रह्म से होकर अवसान ब्रह्म पर ही होता है तथा मध्य में ब्रह्मवैवर्त के माध्यम से 'ब्रह्म' के स्वरूप की पुनः स्मृति करा दी जाती है। इस प्रकार सृष्टि-विद्या से सम्बन्ध ब्रह्मज्ञान तथा ब्रह्म के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए अष्टादश पुराणों की उपयोगिता है। पौराणिक क्रम का यही अभिप्राय है।

उपपुराण

अष्टादश पुराणों की ही तरह अठारह **उपपुराण** भी है, जिनका नामकरण महापुराणों के नामों के आधार पर हुआ है। प्राचीन काल में ऋषियों ने अष्टादश महापुराणों की छायाकृति के रूप में 18 उपपुराणों की रचना की। विस्तार-भय से उपपुराणों में महापुराणों की कथाओं को सूक्ष्म रूप में तथा नवीनता के लिये अन्य विलक्षण नवीन

कथाओं का समावेश किया है। अतः उपपुराण भी महापुराणों के समान आदरणीय, मान्य एवं श्रद्धेय है। ये अठारह उपपुराण ब्रह्मपुराण में उल्लिखित है–

अष्टादशपुराणानामेवमेवं विदुर्बुधाः।
एवञ्चोपपुराणानामष्टादश प्रकीर्तिताः।।

स्कन्दपुराण भी उपपुराणों की गणना के प्रसंग में उनकी संख्या 18 ही बताते हुए कहते है–'पाराशरं भागवतं कौर्मञ्चाष्टादशं क्रमात्'। कूर्मपुराण, देवीभागवत स्कन्द, मत्स्य, गरुड आदि पुराणों में नामोल्लेख पूर्वक 18 उपपुराणों को बताया गया है। कूर्म पुराण के अनुसार उपपुराणों के नाम इस प्रकार है–

आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमथापरम्।
तृतीयं स्कन्दमुद्दिष्टं कुशरेण च भाषितम्।।
चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम्।
दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदीयमतः परम्।।
कपिलं वामनं चैव तथैवोशनसेरितम्।
ब्रह्माणं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च।।
माहेश्वरं तथा शाम्बं सौरं सर्वार्थसचयम्।
पराशरोक्तमपरं मारीचं भास्कराह्वयम्।।

(1) आदिपुराण (2) नारसिंहपुराण (3) स्कान्दपुराण (4) शिवधर्मपुराण (5) दुर्वासापुराण (6) नारदीयपुराण (7) कपिलपुराण (8) वामनपुराण (9) औशनसपुराण (10) ब्रह्माण्डपुराण (11) वरुणपुराण (12) कालिकापुराण (13) माहेश्वरपुराण (14) शाम्बपुराण (15) सौरपुराण (16) पाराशरपुराण (17) मारीचपुराण, तथा (18) भास्करपुराण।

पुराणों का संक्षिप्त विवरण :–

(1) **ब्रह्मपुराण**–यह पुराण 'आदि ब्राह्म' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें पुराण के समस्त विषयों का वर्णन प्राप्त होता है। सृष्टि कथन के साथ सूर्यवंश तथा सोमवंश, पार्वती आख्यान, मार्कण्डेय आख्यान तथा श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन, एवं सांख्य-योग का विशेष वर्णन किया गया है। इसके कुछ अध्याय महाभारत शान्तिपर्व से अक्षरशः मिलते हैं। इसके अध्यायों की संख्या 245 तथा श्लोकों की संख्या 14000 के लगभग है।

(2) **पद्मपुराण**–यह पुराण परिमाण में महाभारत का आधा तथा श्रीमद्भागवत से तिगुना है। मूलरूप से सृष्टि, भूमि, स्वर्ग, पाताल, और उत्तर–इन पाँच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में देव, सृष्टि, पर्वतों, राजाओं तथा राजवंशों का विशद वर्णन प्राप्त होता है। तथा साथ ही मोक्ष के स्वरूप तथा उसके साधनों को बताया गया है। द्वितीय खण्ड में शिवकर्मा नामक ब्राह्मण, राजा पृथु, वेन, सप्तर्षियों तथा विविध प्रकार के नैमित्तिक तथा आभ्युदयिक दानों के अनन्तर सती सुकला की पातिव्रतसूचक कथाओं का वर्णन किया गया है। तृतीय खण्ड में देव, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष आदि लोकों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खण्ड में नागलोक का विशेष वर्णन तथा भागवत पुराण की विशेष महिमा वर्णित की गयी है। पांचवें खण्ड में विविध प्रकार के आख्यानों का वर्णन किया गया है। तथा विष्णुभक्ति की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। इसमें 50,000 श्लोक प्राप्त होते हैं।

(3) **विष्णुपुराण**–दार्शनिक महत्त्व की दृष्टि से यह वैष्णव-दर्शन का मूल आलम्बन है। साहित्यिक दृष्टि से यह पुराण बड़ा ही रमणीय, सरस तथा सुन्दर है। विष्णु की प्रधानता होने पर भी इसमें साम्प्रदायिकता का लेश नहीं है। इसमें 6 अंश तथा 126 अध्याय है। प्रथम अंश में सृष्टि, द्वितीय में भूगोल, तृतीय में आश्रम-चतुष्टयी के कर्तव्याकर्तव्य का वर्णन तथा वेदाध्ययन की महत्ता को प्रतिपादित किया है। चतुर्थ अंश में सोम वंश के साथ यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु, पुरु आदि वंशों का वर्णन किया गया है। पंचम अंश में श्रीकृष्ण के अलौकिक चरित्रों का वर्णन किया गया है।

(4) **वायुपुराण**–यह अत्यन्त प्राचीन पुराण है। यह अन्य पुराणों से छोटा पुराण है। इसके अध्यायों की संख्या 112